

आशा आर्क़ाइव

1.288

ASHA ARCHIVES

उत्तमः शुभे नमः ॥ निर्मलाकाशवः
कुं कुटितवदनं गुरुं न काठनाशं कुर्वति
मम सदहं विपुलतनुं नूनं नोडका लामिम
हिं । कुर्मो गमनं रसो निर्विकुलम वलियुतां धू
वदीयावितं न नलाहं सीतम तर्जुनगमिवि
नः न नि कामाय विधि ॥ १॥ १॥ नमः ॥ १॥ १॥

सर्वप्रहृतिवान्नीगने नमः ॥ १॥ १॥ १॥
यामास यार्थिवः ॥ नयुर्वी ल निर्या तो नाउरद
गनयः पुना चक्रवर्ती सविहयः सफदिया
धि पातव ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
पिगाहिसः ॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥

५॥ तदा संवि न्नाम न सा सा ह संप न मं सु रु द
॥ स मा नाम ध न् दिव्य दिव्या यु ध स वि त्ता न
मा न् र्ध व (ग न् ग ता न रु द् म नु त्ता स पा द य
ज न त रु स्य स्या य नि स स्ति तः ॥ सा हि न्
पृ ष्ठा मा स य स्ति ता ना जाम हा व त्ता न थ रु क
ध न् दिव्य म सि न त वि ह वि त्ता ह स नु ह म य

क म हा क रु म र्ध ॥ दि य मा ना म हा न ज कि न
ठ म् रु द् वा क तः । व य ज स त दा का (ग दि तीः
य न् व ता स नः ॥ आ क नु पृ म य नु सी हा ना
म नि पा जि त्ता ॥ व रु क न् निः सि वा य वि ज
वि स ना हि ना सा स ह ना म् ग नि र्द ह्म स
स न नि ह्म न नृ प द म न थ वा (व रु द् रु द् रु द् रु द्

दाम्खं॥हसिता नरुयाच्चेनिनिदंयुवन
मयुविना॥०॥गानननरुवाच॥०॥यो नृप
तव नाण्डुसर्वग कुरुतयं वन॥दवासूनः
मनूष्यांस्तु सिद्ध विद्या धनानगमः॥मया वत्त
कितासर्वं तस्माच्चागुवजंतिन॥तुष्टाहं नव
नाजं नु तयसा यो नृप च वा दास्या सि त वम

रुहिनदास्यामी

मनसादतिष्ठितं॥०॥ दशमं च
॥०॥ नादित्यं तदपि त्वाहुन गन्तव्यं
नै॥ सनितः सागनात्वेव यावच्चंद्रार्कमदिना॥
वदिष्वर्कमसौ नान्यमिच्छाम्यहं वनं॥ उवम
मुग्गनिः प्राहुव नंदत्वाहुर्गन्तव्यं॥ पुनर्नवाः
ब्रवीतु श्वेनं वनमसुवत॥ संप्राप्य तद्वनं नाजाय

नरु श्रावकदा॥ संकटं दिनकर्तुं व्यंक्षयात्
स्तननेदन॥ बौद्धाश्च उदरि कुं न के क्वं कदा
वनः॥ न(थापनि धनः कप्यहं वाचं वक्ताश्च
सिः॥ ध्यावासनस्वती दुर्वा गन्धधूमं विनायक
नाजायमानथः सुप्रं सो न विदम्यथ क्लेशात्॥०॥
उन्नमः कप्य नो दाय निरि क्लृप्ताय वै॥

नमो नीलमपूपायुनी साय सनि तापव॥ नमानि
मो सदहाय दीये मधु रजहायव॥ नमावि सास
नेयाय शुद्धाद नर्तयायव॥ नमः पूरुषगमत्राय
स नामाय वे नमः॥ नमानिय कुक्षाय यभृष्टः
फायनुमानमः॥ नमः कालामिन्द्राय कृताकार
यव वे नमः॥ नमादीर्घाय गुह्याय कातदृष्टेन

मासुत॥ नमस्तु कटुनाकापदत्रिनीकायवे नमः
मः॥ नमाद्यानाय नोद्राय तीपनाय कनासिन॥
नमस्तु सर्वसुखाय वनीमुख नमामुत॥ सूर्यप्रवत
नमस्तु मुताकन तयदायव॥ अष्टष्टनमस्तु स
वर्हक नमामुत॥ नमामंदगतुह्य निमिषाय
नमामुत॥ नमो नमस्तु सूर्यसर्वतु आय नमः

॥ नमः संस्तु ननु पाप तस्मां गमय नमामु ते ॥ तपु
सादग्ध देहाय नित्यमायन तापव ॥ स्तनचक्र
नमस्तु कां थपात्मजस्तनव ॥ तुष्ट नाश्रुपदत
दिनृक्ष नाश्रुपस्तनवः ॥ देवास्तनमनुष्ठां थसि
दविद्याय नानगमः ॥ त्वया वत्साकिताः सर्वे नगमा
गुर्वुजंति ते ॥ वक्राङ्गकौमुदि (श्वेवमषयः सपः

तानकाः ॥ नाश्रुत्तुष्टम तंतिहा त्वया पृष्टा वत्साकि
ताः ॥ दग्धमथ नगनागमाः पुर्वताथवनामिव ॥
त्वया वत्साकिताः सर्वे नाग्यानिमूततः ॥ प्रसाद
कृत्स्नमसौ नवनाथ हंतवस्त्रितः ॥ ७ वेपुत्वा तदासा
विर्ग्रह नाजामहावसः ॥ ग्रहनाजः नानिर्वोक्त्वा ह
नामावृषादिदं ॥ ७ ॥ गनै ग्वन उवाच ॥ ॥ तुष्ट हं

मनीष चन्द्रावत निदेश (अ. १५५५) का. ०॥

आशा चन्द्रावत

1288

ASHA ARCHIVES

०५३१५१२१५१२

न व ना ज नु स्का प्र न न न स व न ॥ व न ब्रु वि च दा
स्वामि स वृ मा न य न न ॥ ० ॥ द म न थ उ वा व ॥ ० ॥
ज प्र प र ति वि न्द्रु म्भ पा ठा का य मं न क स्य वि ता
द वा स न म नृ ष्या ण प गृ य प ह्नि स न सृ पां ॥ ० ॥
ग नि नृ वा च ॥ ० ॥ गृ हा नृ गृ हा नृ मा गृ हा पी ण
के ना म्भ हं ॥ ० ॥ द य मु व ना स्मा कं पु क्क स व व दा मिः

ने ॥ त्व पा प्रा क मि द स्का वं य प ठि ष्यं ति मा न वाः ॥ १ ॥
नृ पा वा स्ति या वा पि म हा द्या न ल यी ठि ताः ॥ २ ॥ क का
सो धि का सं वा त वा ण्य मा द दा म्य हं ॥ ३ ॥ य य स्म न
हि न ण्य पि ज न्म ना मि दि ती य गः ॥ ४ ॥ न त स्मा हं त
व ली ज मा मां स्तो ति सृ त कि तः ॥ ५ ॥ यः पु नः प्र द य
पू रूः सृ विः सा स्मा स मा हि तः ॥ ६ ॥ स मि य वः स म ल्य

वृष्टिमांसाहतामम॥मदिनषुवि॥मयनसु
प्रजननपूजयेत्॥पूजयित्वाउपस्मात्रं
त्वावेवकृतायसिः॥तस्यपीठंनवेवाहंकनि
ष्कामिकदावन॥अवनजन्मसंनदन्मस्यंत
ईदंमसुवा॥नक्रामिसुतंतंतस्यपीठामन्यग्र
त्यव॥अननक्रममागेनपीठमूकंरुगहवत्॥

वनदमंतुसंप्राप्यनाडादन्मन्यसुदा॥मन्यवृत्त
र्थमात्मानंनमस्तुयमनेज्यनं॥गनिनावात्यनू
त्यगःस्तुम्हानंवीगमत्तदा॥स्तुम्हानंसततागत्वाः
प्राप्यमातवत्तदा॥मःदंप्रातनूत्थयवनंस्तु
प्रमदाप॥०॥पूजयित्वाअनिग्नपितृसुतुष्य
तितास्तुनिः॥सर्वीरीष्ट्यदानित्त्वरविष्यतिनसं

शमः॥५॥५॥ नृति श्री स्वदुप ना एव न थद
नं ग नै ग्य न सौ पं स ना यं ॥ ५१ ॥ ८ ॥ ० ॥ ८
तथाप वि न मा ॥ ग्रापतिः गं क ना व धा ॥ गे न स क
स न स्य नि । ग ॥ स गः कृ द्वा नं दि ग म व मा म न प रु थ ॥ ८
मि ना पा प रु द्वा क्रि द्या म नै ता नू ला नू मा कृ गी । व मः स
अ म न वे व रु त गू न त न ये व न सा दि नः स नु व म
न मि व वं ध स र्म स ॥ ॥ न म स र्म व व म म मि व
वा नि नो व न म म थ न ये व मि व वं ध स द व
जि गु न स न नि ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥

नमः श्रीगणेशाय ॥ ॐ ॥ हां कृपा इतो ॥ ॥
वसिं विम ॥ ० ॥ ~~अथ वसिष्ठोवा~~ नकापस
का ॥ ० ॥ नदीहर्ने वसगहनं वैष्णवीमिदम
हनं वसगमुक्तिनामिपं म्यनिष्ठापममा
नानिचरवानदमहनं वसगमुक्तिनामिप

असमा नोयमसमा नानिचरवानदमहनं वस
गमुक्तिनामिपमसवधुर्मसवधुर्विवखाः
नदमहनं वसगमुक्तिनामिपमसजाताजम
मसगानानिचरवानोक्तुनामि ॥ ० ॥ मम नमः ॥ ॥
हं तज्जासिहृदमसिमृतमसिधामनामामिधि

॥ ॐ ॥ २१

यंदया नाम नाष्टुसंदवयजनमासि॥ ० ॥ जाकि
तंरकायावक्रसपिपावमनसनय॥ ० ॥ अथ
वीचदधिवकाप्रथमादेव्यातिषक्। अहिंश्वसः
वोष्मृपंतर्वाश्वघातुधन्याधनाविःपनासुव
॥ पिखात्खसंगय॥ ० ॥ मतरुतासचाने

वो।

कोप॥ ॥ स्वस्तिनामिमीतामनातगः॥

पूजाहस्तनिपाकदवयानननका नाम
सनकनकिंसकसंविमथगसागनमाइता॥

॥ सितायासारुसतमाडातुवकं धर्मधूनकाडाल
सकसपाममासइता॥ स्वस्तिनामिमीता॥ ॥

पाःरुतनीर्जा॥ २

संस्कृतं १२२ म क सं संस्कृतं कूटुम्बिकावा
 तम वसिष्ठा तम ॥ ॥ पदयक ॥ पाः
 रुत ॥ खंड विस्तृता ॥ दधिका प्रा ॥ ॥ धन धनः
 काता दहि ॥ तम क ॥ धन धन काता वसिष्ठा
 वासुदेवा वा तमाता उ कि सं सं न च प्रा सत य

वसिष्ठा क ॥ तं जन मा क ॥ ॥ स्वमि ना मि
 मी ता ॥ ॥ धन धन काता सि पी का त मा वा
 वा ता सत माता म न च प्रा स उ कि सं त मा वा
 य ॥ ॥ पुन ह्वा दि या ॥ श्री ग्व न सं श्री ग्व प ह्वा
 व हा ना वृ षा ॥ ग्व न ह्वा सि नृ प म ग्वि नो वा नृ ॥

१ श्रीसूर्योवसावनः
ॐ नमः श्रीसूर्याय ॥ ॐ चिदाक्षरं श्रीसूर्य
वैविध्यकः ॥ ॐ ज्यादि ॥ काश्चपयः ॐ यजम
नामथ नाम्नाः प्रथमगताः नैकैर्दुः श्रीसूर्य
यार्थं नमः ॥ प्रथमं नमः ॥ ॐ किं गतं न नैकैः
॥ ॐ जवाकसमगं कागं काश्चपयं महायुति

तस्मात्सर्वपापघ्नं अस्मिदिवाकनः ॥ ॐ
वपुः जाविधानं न सर्वं विधिपनिपूर्वममु॥

श्रीगणेशायनमः॥अथसंनिप्रदोष
विधिवक्षेत्॥॥अद्यादि॥समस्तक
लसौभाग्यवर्द्धनारिखिलसौख्यावाप्तये
सकलदारिद्र्यप्रसमनार्थः॥शनिप्रदो
षमहंकरिव्योःतदंगतयाज्ञानमहं

करिष्येः तदंगतया ॥ सविप्रदो
षधुं तमिह करिष्ये ॥ संध्याकाले स
नं कुज्यात् ॥ इति शं निप्रदोषस्य नप
र्व ॥ सूचितेव त्रिधारयेत् ॥ द्यटिका

त्रेयादक्षम प्राक पूर्वस्नानं कुर्यात्॥
शुक्लांबरधरो भूत्वा वाग्यतः स नृशिव
पूजां प्रसारयेत्॥ सद्यो दक्षो मयेन
देव स्नानं उपलिया॥ यंच वर्णसोमि